पाठ 2. प्यार की नींव

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य एक आदर्श शिक्षक के व्यक्तित्व को प्रकट करना है। साथ ही, बच्चों को आपसी प्रेम, भाईचारा, अहिंसा आदि मानवीय गुणों को विकसित करने की सीख देना है।

पाठ का सारांश

रहमतुल्ला खाँ को सब मौलवी साहब कहकर पुकारते थे। उन्हें अपने गाँव से बहुत लगाव था। मौलवी साहब का व्यवहार बड़ा ही हार्दिक था। इस कारण वे सभी के प्रिय थे। मौलवी साहब का इकलौता बेटा करीम और बीवी फ़ातिमा का देहांत हो चुका था। एक बार देश में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं। गाँव में भी लोग एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं। इसी दौरान गाँव के मुखिया का बेटा मौलवी साहब को बताता है कि कुछ लोग उन्हें मारना चाहते हैं। परंतु मौलवी साहब को इस बात का तनिक भी भय नहीं होता। एक रात मौलवी साहब को मारने के इरादे से कुछ लोग उनके घर आते हैं। ये वही लोग थे जिन्हें कभी मौलवी साहब ने पढ़ाया था। मौलवी साहब का प्यार, स्नेह और निडरता देखकर उन्हें अपनी करनी पर पश्चात्ताप होता है। मौलवी साहब उन्हें माफ़ कर देते हैं। ज़िंदगी की इमारत अगर प्यार की नींव पर टिकी हो तो धर्म और जाति के ज़ोरदार झटके भी उसको नहीं गिरा सकते।

अध्यापन संकेत

पाठ का वाचन करें। पाठ की महत्वपूर्ण घटनाओं तथा पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। बच्चों से मौलवी साहब के चरित्र की विशेषताओं के बारे में पूछें। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- बच्चों से जानें, सांप्रदायिक हिंसा क्या होती है?
- इसे किस तरह रोका जा सकता है?
- गुरु का स्थान सदैव ऊँचा माना जाता है। क्यों? अपने विचार रखो।
- यदि कोई तुम्हें हानि पहुँचाना चाहे अथवा तुम्हारे प्रति बैर-भाव रखे, तो उसके प्रति तुम्हारा व्यवहार कैसा होगा?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।